संपादकीय

धरती की जन्नत में पीएम मोदी

आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी धरती की जन्नत कहे जाने वाले कश्मीर आ रहे हैं। श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में वे सार्वजनिक सभा को भी संबोधित करेंगे। माना जा रहा है कि इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी का लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार आरंभ हो जाएगा। जम्मू कश्मीर के लोग वर्ष 2019 के बाद क्षेत्र में लगातार विकास देख रहे हैं, आतंकवाद और रोज रोज के बंद तथा पत्थरबाजी अब बीते दिनों की बात हो चुकी है। यहां के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति उत्पादन और विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार की अनेक योजनाएं शुरू की गईं। पांच दशकों के बाद कश्मीर में पहली बार अध्यापकों के लिए आवंटित भर्तियाँ हुईं। जम्मू-कश्मीर में पंजाबी भाषा और संस्कृत को राज्य की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके अलावा, विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक विकास के क्षेत्र में भी कई प्रगति की गई है। जम्मू और कश्मीर में 2019 के बाद संविदा निर्माण के लिए कई पहल शुरू की गई, जो स्थायी रूप से रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने का प्रयास कर रही हैं। जम्मू और कश्मीर में पंचायती राज निर्वाचनों का आयोजन हुआ, जो लोकतंत्र की बढ़ती गहराई को दर्शाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में नई योजनाओं और प्रोग्रामों की शुरुआत की गई है, जो विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए बेहतर संभावनाएं प्रदान कर रही हैं। जम्मू और कश्मीर में इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के कई परियोजनाएं शुरू की गई हैं, जो आम लोगों को सुविधाएं प्रदान कर रही हैं और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा दे रही हैं। कृषि, उद्योग और पर्यटन सेक्टर में विकास के लिए नई योजनाएं और नीतियां शुरू की गई हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का लक्ष्य रखती हैं। इन उपलब्धियों के अलावा, कई अन्य क्षेत्रों में भी विकास की कई पहलों की गई है। ये पहले जम्मू और कश्मीर के सामाजिक और आर्थिक विकास में सकारात्मक परिणामों की ओर पहुंचने की दिशा में कदम उठा रहे हैं। केंद्र सरकार द्वारा अस्थायी संविधान के धारा 370 को हटाने का निर्णय लिया गया जिससे अब जम्मू-कश्मीर भारतीय संविधान के अधीन आ गया। नई शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों की शुरुआत की गई जो विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए बेहतर संभावनाएं प्रदान कर रही हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के कई परियोजनाएं शुरू की गई जैसे कि सड़क, पुल, बिजली, पानी संबंधित परियोजनाओं ने स्थानीय लोगों को काफी राहत प्रदान की है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में समाज के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की गईं। ये उपलब्धियां केवल जम्मू और कश्मीर में हुई हैं और राज्य के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान को प्रतिपादित करती हैं। इन उपलब्धियों के माध्यम से, सरकार ने जम्मू और कश्मीर के साथी नागरिकों के लिए एक सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में कदम उठाया है। भाजपा द्वारा घोषित लोकसभा चुनावों के लिए प्रत्याशियों की प्रथम सूची में जम्मू संभाग के दोनों वर्तमान सांसदों को फिर से दोहराया जा रहा है। कश्मीर संभाग में पिछले लोकसभा चुनाव में एक सीट आई थी जो कि जम्मू-कश्मीर को दो केंद्रशासित प्रदेशों में बांट दिए जाने के बाद लद्दाख में चली गई और कश्मीर में बची तीन सीटों पर नेशनल कांफ्रेंस का कब्जा रहा। अब भारतीय जनता पार्टी की कोशिश है कि कश्मीर की जनता भी अपने सांसद के रूप में भाजपा के ही प्रत्याशी को चुनकर लोकसभा में भेजे। हालांकि यहां के संप्रदायगत माहौल और पिछले इतिहासों को देखते हुए यह थोड़ा मुश्किल लगता है क्योंकि वहां के स्थानीय लोग स्थानीय पार्टियों पर ही भरोसा करते आए हैं जिनमें नेशनल कांफ्रेंस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी मुख्य रही हैं। लेकिन वर्ष 2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद परिस्थितियां तेजी से बदली हैं जिस कारण स्थानीय लोग भी स्थानीय पार्टियों से विमुख होते नजर आ रहे हैं। इसका फायदा भाजपा को इस वर्ष के लोकसभा चुनावों में मिल जाए तो कोई बड़ा आश्चर्य नहीं होना चाहिए। हां यह जरूर है कि तीनों सीटों तो नहीं लेकिन अगर कश्मीर की एक भी सीट पर भाजपा विजयी परचम लहरा देती है तो यह उसके लिए बड़ी उपलब्धि होगी। प्रधानमंत्री मोदी की श्रीनगर यात्रा वहां कई और विकास कार्यक्रमों का शुभारंभ करेगी, लेकिन यह तो आने वाला चुनाव ही बताएगा कि केंद्र सरकार के कामों से कश्मीर की जनता कितनी प्रभावित है?

कौन करता है नौकरीपेशा औरतों को परेशान

आर.के. सिन्हा

दिल्ली पुलिस ने हाल ही में इस तरह के शख्स को पकड़ा जो एक कार्यशील महिला का लगातार पीछा कर रहा था। यह तो सिर्फ एक उदाहरण मात्र है। इस तरह के तमाम केस पुलिस के सामने आते रहते हैं। किसी महिला का पीछा करना यौन उत्पीड़न का एक गंभीर रूप है और भविष्य में होने वाली किसी गंभीर घटना की पहली चेतावनी भी है। बेशक, पीड़िता को चुपचाप सहने के बजाय आगे आना चाहिए और अपने साथ हो रहे अपराध की रिपोर्ट पुलिस को करनी चाहिए ताकि इसे शुरू में ही खत्म किया जा सके।

अब सामाजिक, व्यापारिक, संस्थागत जीवन का शायद ही कोई इस तरह का क्षेत्र बचा हो, जिधर महिलाएं नौकरी के लिए न जाती हों। खेत-खलिहानों, बैंकों,सरकारी और निजी दफ्तरों से लेकर घरों में चूल्हा-चौका करके अपने परिवार की आर्थिक मदद करने में आधी आबादी किसी भी तरह मर्दों से पीछे नहीं है। कहा जा सकता है कि अब देश में करोड़ों महिलाएं कार्यशील हैं। देश में बढ़ती साक्षरता के चलते नौकरीपेशा औरतों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। जाहिर है, उन्हें घरों से निकलकर अपने दफ्तर और फैक्ट्रियों में तो जाना होता ही है। आपको हजारों औरतें विभिन्न संस्थानों में नाइट ड्यूटी करते मिलेंगी। पर अपने दफ्तर या फिर स्कूल-कालेज जाने वाली लड़कियों और महिलाओं को कुछ विक्षिप्त मानसिकता के लोग परेशान करते रहते हैं। वे उनके (महिलाओं) के पीछे पड़ जाते हैं। उन्हें वे तरह-तरह से परेशान करते हैं। इस हरकत को अंग्रेजी में कहते हैं 'स्टॉकिंग।'

दिल्ली पुलिस ने हाल ही में इस तरह के शख्स को पकड़ा जो एक कार्यशील महिला का लगातार पीछा कर रहा था। यह तो सिर्फ एक उदाहरण मात्र है। इस तरह के तमाम केस पुलिस के सामने आते रहते हैं। किसी महिला का पीछा करना यौन उत्पीड़न का एक गंभीर रूप है और भविष्य में होने वाली किसी गंभीर घटना की पहली चेतावनी भी है। बेशक, पीड़िता को चुपचाप सहने के बजाय आगे आना चाहिए और अपने साथ हो रहे अपराध की रिपोर्ट पुलिस को करनी चाहिए ताकि इसे शुरू में ही खत्म किया जा सके।

एक बात समझ लें कि किसी सिरफिरे का किसी महिला का पीछा करना प्रारंभिक चरण है। उसका अंतिम इरादा महिला के साथ छेड़छाड़ या बलात्कार ही हो सकता है। राजधानी दिल्ली के न्यू सीमापुरी इलाके में हजारों मेहनतकश लोग छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। यहां अधिकतर उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा जैसे राज्यो से आए लोगों के साथ अनेकों बांग्लादेशी हैं। अब बांग्लादेशियों के पास वैसे तो अवैध आधार कार्ड वगैरह सबकुछ है। यहां रहने वाली बहुत सारी महिलाएं अपने इलाके में चलने वाली 'महिला पंचायत' में अपने साथ घरों में होने वाले उत्पीड़न से लेकर घरों के बाहर उनका पीछा करने वालों की शिकायत करने के लिए आती हैं। आगे बढ़ने से पहले बता दें कि इस महिला पंचायत में पीड़ित महिलाओं को उनके कानूनी हकों के बारे में पंचायत में काम करने वाली काउंसलर विस्तार से जानकारी देती हैं और उनकी समस्या का समाधान खोजती हैं। इस महिला पंचायत, जिसका संबंध दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी से है, उसके प्रबंधक फादर सोलोमन जॉर्ज बताते हैं कि कार्यशील औरतों के पीछे पड़ने के मामले बहुत तेजी के साथ बढ़ रहे हैं। किसी महिला का पीछा करने वाले शख्स पीड़ित महिला को फोन पर अश्लील मैसेज भी भेजते रहते हैं। वह दिनभर और देर रात तक उसे फोन करके परेशान करते हैं। महिला के घर से निकलने पर वह उसे छूने या बात करने की चेष्टा करते हैं। इस कारण से बहुत सारी औरतें नौकरी छोड़ने तक के बारे में सोचने लगती हैं। अनेकों किशोरियां डर के मारे पढ़ाई भी छोड़ देती हैं। दिल्ली में सेंट स्टीफंस कॉलेज के बाद अब हरियाणा के सोनीपत में सेंट स्टीफंस कैम्ब्रिज स्कूल स्थापित करने वाली दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी से जुड़े हुए फादर सोलोमन जॉर्ज कहते हैं कि जो लोग स्टॉकिंग में शामिल होते हैं, वे बहुत मोटी चमड़ी वाले दुष्ट अपराधी होते हैं। सख्ती से मना करने के बाद भी वे बेशर्मी से महिला का पीछा करते रहते हैं। महिला के उन्हें अस्वीकार करने के बाद भी वे बाज नहीं आते। वे अपनी हरकतों को जारी रखते हैं।

बेशक, स्टॉकिंग एक गंभीर अपराध है। इस अपराध से दो-चार होने वाली लड़कियों/ महिलाओं को तुरंत पुलिस में शिकायत करनी चाहिए। यदि वे आगे आकर शिकायत नहीं करेंगी, तो उनका पीछा करने वालों को गलतफहमी होने लगेगी कि वे सचमुच में बहुत ताकतवर हैं। उन्हें लगेगा कि वह जो चाहे कर सकते हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि जब किसी महिला को अपने पीछे पड़े हुए व्यक्ति से दो-चार होना पड़ता है तो वह बुरी तरह से मनोवैज्ञानिक रूप से टूटने लगती है। यह अपने आप में घोर उत्पीड़न है और इससे कम कुछ नहीं। लड़कियाँ पीछा करने वाले से लगातार भयभीत रहती हैं।

याद रख लें कि किसी भी समाज के चरित्र को जानने के लिए आपको यह देख लेना काफी होगा कि वहां पर कितनी महिलाएं कार्यशील हैं। जिस समाज में जितनी अधिक औरतें कार्यशील होंगी वह समाज उतना ही प्रगतिशील माना जाएगा। इसलिए कार्यशील महिलाओं को सुरक्षा देना समाज और सरकार का पहला दायित्व है। अब नौकरियां सुबह दस से शाम पांच बजे तक की बहुत कम रह गई हैं। अब तो दिन-रात दफ्तर चलते हैं। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नौकरियों की बहार आने के बाद हम देख रहे हैं कि बड़ी संख्या में नौकरियां रात के समय की ही होती हैं। इन परिस्थितियों में कार्यशील महिलाओं को सुरक्षा तो देनी ही होगी। यह देखना होगा कि उनका दफ्तर के भीतर किसी तरह से यौन उत्पीड़न न हो। उन्हें कोई फोन करके परेशान न करता हो या फिर उनका कोई पीछा न करता हो।

इसमें कोई शक नहीं है कि किसी भी देश और समाज की पहचान इस बात से ही होती है कि वहां पर महिलाएं कितनी आर्थिक रूप से स्वावलंबी हैं। वे स्वावलंबी तो तब ही होंगी जब उन्हें सही ढंग से शिक्षित किया जाएगा और उन्हें रोजगार में पर्याप्त अवसर मिलेंगे। इसके अलावा, उन्हें कार्यस्थल पर बेहतर माहौल और अपने पुरुष साथियों के बराबर वेतन भी मिलेगा। बेशक, जिन दफ्तरों में महिलाएं मुलाजिम होती हैं वहां पर माहौल कुल मिलाकर सकारात्मक ही रहता है। इसलिए किसी दफ्तर का समावेशी होना बहुत जरूरी है। हां, उस वातावरण को कुछ गटर मानसिकता वाले लोग खराब अवश्य करने की कोशिश करते हैं। चूंकि अब विश्व महिला दिवस (8 मार्च) को आने में कुछ ही दिन शेष बचे हैं, इसलिए सारी बहस कार्यशील औरतों तक सिमट कर नहीं रह जानी चाहिए। अब भी अनेक औरतों को घरों में अपने ही पतियों के जुल्म-ओ-सितम का शिकार होना पड़ता है। महिला पंचायत में आने वाली औरतों में उन बेबस महिलाओं की संख्या भी खासी रहती है, जो घरेलू हिंसा का लगातार शिकार होती हैं। जब देश में औरतों को उनके वाजिब हक दिलवाने की मांग हो तो उन असहाय औरतों को नजरअंदाज न कर दिया जाए जो दिन-रात अपने घरों में काम करने के बाद भी अपने जालिम पतियों के वहशीपन का शिकार होती रहती हैं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

सांप की फितरत है डसना

नरेंद्र भारती

वक्त एक ऐसा तराजू है जिसके एक पलड़े में जिन्दगी और दूसरे पलड़े में मौत होती है जीवन और मृत्यु में सिर्फ सांसों का फासला है। जब इन्सान जिन्दा होता है तो कोई उसका हाल तक नहीं पूछता लेकिन जब संसार से रुखस्त हो जाता है तो हर आदमी मातम में शामिल होने में अपनी शान समझतें है। जिन्होंने जब जिन्दा था तो बात तक नहीं की होंगी। जब जीता है तो एक जोड़ी कपड़ा तक नसीब नहीं होता मगर जब उसके किसी काम का नहीं होता उसके मृत शरीर पर सैंकड़ों चादरें डाली जाती है।जीते जी जिसे घी नहीं मिलता जलाती बार मुहं में शुद्व देशी घी की आहुती दी जाती है जो व्यर्थ है।

सांप को कितना भी दूध पीला दीजिये वह तुम्हें डसने से नहीं छोड़गा क्यूंकि डसना उसकी फितरत है उसी प्रकार कुछ लोग भी सांप की तरह होते हैं उनके लिए भले ही आप कितना भी अच्छा कर लीजिये एक दिन अपनी औकात दिखा देंगे। फ़ितरती लोग कभी नहीं सुधर सकते ऐसे लोग गंदी नाली के कीड़े के समान होते हैं द्य ऐसे दो मुँहे सांप प्रवृति के लोगों से दूर रहना चाहिए द्य ऐसे लोग समाज के लिए घातक होते हैं द्य यह लोग अपने मतलब के लिए किसी भी हद तक गिर जाते हैं। ऐसे लोग दुष्ट होते हैं इनकी दुष्टता से पूरा समाज दुखी होता है द्य समय समय पर ऐसे लोगों को सजा मिलती रहती है मगर यह लोग अपनी हरकतों से बाज नहीं आते द्य समय बलवान है समय ने ऐसे लोगों को धूल चटाई है द्य सुख दुःख आते रहते हैं लेकिन ऐसे फ़ितरती लोग अपनी आदत नहीं छोड़ते द्य सांप तो काल आने पर काटता है मगर ऐसे लोग तो कदम कदम पर काटते रहते हैं।

वक्त एक ऐसा तराजू है जिसके एक पलड़े में जिन्दगी और दूसरे पलड़े में मौत होती है जीवन और मृत्यु में सिर्फ सांसों का फासला है।जब इन्सान जिन्दा होता है तो कोई उसका हाल तक नहीं पूछता लेकिन जब संसार से रुखस्त हो जाता है तो हर आदमी मातम में शामिल होने में अपनी शान समझतें है। जिन्होंने जब जिन्दा था तो बात तक नहीं की होंगी। जब जीता है तो एक जोड़ी कपड़ा तक नसीब नहीं होता मगर जब उसके किसी काम का नहीं होता उसके मृत शरीर पर सैंकड़ों चादरें डाली जाती है।जीते जी जिसे घी नहीं मिलता जलाती बार मुहं में शुद्व देशी घी की आहुती दी जाती है जो व्यर्थ है।कहने का तात्पर्य यह है कि मानव की जीते जी सहायता कि जाए तो वही सच्ची मानवता कहलाएगी।आज लोगों के पास समय नहीं है इतना व्यस्त है कि रोटी खाने के लिये समय नहीं है। हर समय पैसा ही पैसा कमाने मे व्यस्त रहता है। अनैतिक तरीकों से धन कमा रहा है मगर मानव को यह पता है कि दुनिया में नंगा आया था नंगा ही जाएगा तो यह धन-दौलत का लालच क्यों कर रहा है।गलत काम करके पैसा अर्जित करके आलिशान महल बना रहा है मगर पल की खबर नहीं है।मानव को एक दूसरे के सुख दुख में शामिल होना चाहिए। आज कुछ तथाकथित अमीर बने लोग कारों में बैठकर ऐसे बन जाते है कि धरती पर चल रहे मानव को कीड़े-मकोड़े समझते है आज कारे तों छोटे से छोटे लोगों ने रखी है कार में बैठकर कोई बड़ा नहीं बन सकता समाज के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने वाले के आगे कारों की चमक फीकी पड़ जाती है। यह लोग कार, कोठी और पैसे को ही जीवन का ध्येय मान बैठे हैं।महगें कपड़े पहन कर कोई आदमी बड़ा नहीं है बल्कि उसके गुणों के कारण ही पहचान होती है।कुछ लोग आत्मकेन्द्रित होते हैं बस अपना काम हो जाए दुनिया भाड़ में जाए।समाज में ऐसे लोग घातक होते है।आज भूखी जुएं अपनी औकात भूलकर ऐसे इतराती है कि जैसे खानदानी रईस हो पर वक्त के पास हर आदमी का लेखा-जोखा है कि कौन रईस था और कौन दाने-दाने को मोहताज था। किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए हर आदमी से समानता का व्यवहार करना चाहिए।कभी भी भेदभाव नहीं करना चाहिए।वक्त बदलते देर नहीं लगती भाग्य किसी को भी अर्श पर ले जाता है और किसी को फर्श पर ले जाता है इसलिए मानव को मर्यादा में रहकर ही हर काम करना चाहिए।आदमी को किसी के साथ भी धोखा नहीं करना चाहिए।किसी के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहिए।क्योंकि एक बार विश्वास टूट जाता तो फिर से कायम कर पाना मुश्किल हो जाता है।ऐसे मानव का जीवन व्यर्थ है जो दूसरों को दुख देता है।गरीब आदमी को कभी नहीं सताना चाहिए अगर गरीब की बददुआ लग जाए तो बड़े से बड़ा धराशायी हो जाता है इसलिए हर मानव को हमेशा मानव के लिए अच्छे कार्य करने चाहिए।मानव को ऐसे काम करने चाहिए कि मरने के बाद भी उसे सदियों तक एक अच्छे इन्सान के रुप में हमेशा याद किया जा सके। भूखे को रोटी और प्यासे को पानी पिलाना चाहिए।आज का मानव पैसों से बैंक के खातों को तो भर रहा है मगर उपर का खाता खाली है इसलिए प्रत्येक साधन-संपन्न मानव को लाचार व गरीब लोगों को दान पुण्य करना चाहिए। मानव को एकजुट होकर हर मानव का काम करना चाहिए, कहते है कि एकता में बड़ा बल होता है।प्रत्येक मानव को पता है कि एक दिन सबको मौत आनी है तो फिर मानव क्यों नहीं समझ रहा है।मानव जब कोई चीज बनाता है तो वह उसकी गांरटी तय करता है मगर उसकी अपनी कोई गांरटी नहीं है कि कब प्राण निकल जाएं।रात दिन अवैध तरीकों से जायदाद जोड़ रहा है मगर किसके लिए आज तक कोई उठा कर नहीं लेकर गया तो फिर यह मोह माया क्यों है। मानव जीवन एक बार ही मिलता है बार-बार नहीं मिलता।मानव को नीच कर्मो को छोड़ देना चाहिए।

कानून सबके लिए समान

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सांसदों और विधायकों को सदन में वोट डालने या भाषण देने के लिए रिश्वत लेने के मामले में किसी भी केस से कोई छूट नहीं होगी। रिश्वतखोरी का मामला विशेषाधिकार से संरक्षित नहीं है। इस तरह सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की संवैधानिक पीठ ने सर्वसम्मति से 1998 के पीवी नरसिम्हा राव केस में दिए अपने फैसले को पलट दिया। सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर एक बेहद महत्वपूर्ण फैसले के जरिए देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को दिशा देने की कोशिश की है। इस बार मामला सांसदों को मुकदमा चलाए जाने से मिली संवैधानिक छूट का था।

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिए फैसले में इस छूट की सीमाएं रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया कि कानून के शासन की राह में किसी तरह का अड़ंगा स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। यह पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव के कार्यकाल से जुड़ा एक मामला था, जिसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा के सांसदों पर रिश्वत लेकर सरकार के पक्ष में वोट डालने का आरोप था। 1998 में इस मामले में दिए फैसले में सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यों की पीठ ने सांसदों पर मुकदमा चलाए जाने पर यह कहते हुए रोक लगा दी थी कि उन्हें संविधान के तहत मुकदमे से छूट हासिल है। अब सात सदस्यों की संविधान पीठ ने इस फैसले को पलट दिया है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाय चंद्रचूड़ की अगुआई वाली संविधान पीठ का यह तर्क महत्वपूर्ण है कि सांसदों को जो छूट दी गई है, वह विधायिका के कामकाज के सुचारू संचालन से ही संबंधित है। उसे किसी भी सूरत में रिश्वत लेने की आड़ के तौर पर इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। ऐसा किया गया तो सांसदों और विधायकों की एक ऐसी बिरादरी बन जाएगी, जो कानून के ऊपर मानी जाने लगेगी। यह फैसला ऐसे समय आया है, जब देश में आम चुनाव की घोषणा होने वाली है। जाहिर है, ऐसे माहौल में इस फैसले का भी कुछ न कुछ चुनावी असर होने की संभावना नकारी नहीं जा सकती। दलगत समीकरणों से अलग हटकर कहा जा सकता है कि चाहे जिसे भी वोटों का जो भी नफा-नुकसान हो, इस तरह के फैसले अगर चुनावी मुद्दा बनते हैं तो आखिरकार राजनीति के शुद्धिकरण में मदद ही करेंगे। लेकिन यह मुद्दा स्वस्थ बहस की ओर ले जाए, इसके लिए जरूरी है कि इसे संकीर्ण नजरिये से न देखा जाए।

सवाल यह है कि अगर पैसे का या तोहफों का लेनदेन रिश्वत है तो फिर मंत्री पद या चुनावी टिकट या किसी और चीज के प्रलोभन में दलबदल या क्रॉस वोटिंग करना और कराना क्या है? अगर इसे रिश्वत मानेंगे तो उसकी पहचान कैसे करेंगे? और फिर, इन कथित प्रलोभनों या पॉलिटिकल करियर में ऊंचाई हासिल करने की आकांक्षाओं से अलग राजनीति कैसे विकसित करेंगे?

श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह- एक नए युग का ऐतिहासिक शुभारंभ

रामलाल

22 जनवरी 2024 को, अयोध्या की प्राचीन नगरी में एकता, श्रद्धा, भक्ति और समरसता का अविस्मरणीय संगम देखा गया। जहां देश के प्रत्येक कोने से, भिन्न भिन्न पृष्ठभूमियों से, सहस्त्रों राम-भक्त भव्य राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बनने के लिए एकत्र हुए। श्री रामलला के आगमन के नाद से भारत वर्ष में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक नवोत्साह की लहर का संचार हुआ।

भारत के इतिहास में इस तरह का भव्य आयोजन कदाचित ही हुआ होगा, जिसमें सूक्ष्म स्तरीय योजना एवं वृहद् स्तरीय समायोजन का अनोखा मेल देखने को मिला। अयोध्या में भारत और सनातन सभ्यता की प्रत्येक ध्वनि, प्रत्येक भावना और प्रत्येक परम्परा को प्रभु श्रीराम के छत्र में प्रतिछाया मिली। लक्षद्वीप और अंडमान के एकांत द्वीपों से लद्दाख के सुदूर पर्वतों तक, मिज़ोरम एवं नागभूमि के हरित वनों से लेकर मरुभूमि की रेत तक, भारत के 28 राज्य एवं 8 केंद्र शासित प्रदेश इस महा-आयोजन के साक्षी बने और भारत की सभी भाषाओं ने कहा की 'राम सभी के हैं।'

सितम्बर, 2023 से ही निमंत्रितों की सूची बनाने से लेकर उनको बुलाने की व्यवस्था का चिंतन प्रारम्भ हो गया था सभी को निमंत्रण देने का क्रम डिजिटल पत्राचार से प्रारम्भ हुआ, जिसके बाद सभी निमंत्रितों को राष्ट्र के सुदूर क्षेत्रों में जाकर भी व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दिए गए। अंततः सभी निमंत्रितों को एक व्यक्तिगत कोड दिया गया। कार्यक्रम का स्वरूप पूर्णतयः धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रखा गया। इस हेतु सभी राष्ट्रीय और प्रांतीय दालों के राष्ट्रीय अध्यक्षों और गृह प्रदेश के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त किसी केंद्रीय मंत्री अथवा मुख्य मंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया। उस दिन आमंत्रित विशिष्ठ अतिथियों में यह भी एक चर्चा का विषय था।

आमंत्रित महानुभावों में 10 रुपए से लेकर करोड़ों तक का दान करने वाले सभी दान-दाता वर्गों का प्रतिनिधित्व था, राष्ट्र और सनातन सभ्यता के विभिन्न उद्गम स्थलों से निकलने वाली 131 प्रमुख और 36 जनजातीय; नवीन एवं प्राचीन धार्मिक परम्पराओं का प्रतिनिधित्व था। इनमे सभी अखाड़े, कबीर पंथी, रैदासी, निरंकरी, नामधारी, निहंग, आर्य समाज, सिंधी, निम्बार्क, पारसी धर्मगुरु, बौद्ध, लिंगायत, रामकृष्ण मिशन, सत्राधिकर, जैन, बंजारा समाज, मैतेई , चकमा, गोरखा, खा़सी, रामनामी आदि प्रमुख परम्पराएँ सम्मिलित थी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, घुमंतू समाज (हृश्वद्बड्डस्र ञ्जह्लद्बड्डद्गह्य) के प्रमुख जनों का भी प्रतिनिधित्व था। विभिन्न मत-पंथ जैसे इस्लाम, ईसाई, पारसी का भी यहाँ प्रतिनिधित्व था। 1949 में रामलला के पक्ष में निर्णय लेने वाले ज़िला न्यायाधीश श्री नय्यर के परिवार के साथ साथ तत्कालीन छ्वह्वरु4 ष्टश्वठ्ठह्यह्लड्डड्ढद्यद्ग अब्दुल बरकत, जिन्होंने गवाही दी थी, उनके परिवार को भी आमंत्रित किया गया था। रामलला के विरुद्ध मुक़दमा लड़ने वाले परिवार के साथ तत्कालीन अधिकारियों के परिवारों को भी निमंत्रण दिया गया था। रामजन्मभूमि आंदोलन का नेतृत्व करने वाले और इस आंदोलन में बलिदान हुए भक्तों के परिवार के सदस्य, रामजन्मभूमि की न्यायिक प्रक्रिया में सहभागी अधिवक्ता-गण भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए। भारत की माननीया राष्ट्रपति और माननीय उप-राष्ट्रपति जी के साथ पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रधान-मंत्री भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित थे। भारत की सुरक्षा में तत्पर तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सेनाध्यक्ष और परमवीर चक्र विजेता भी यहाँ थे और भारत को चंद्रमा तक ले जाने वाले इसरो के वैज्ञानिकों से लेकर भारतीय कोविड-वैक्सीन बनाने वाले वैज्ञानिक भी यहाँ थे। उच्चतम न्यायालय के तीन पूर्व मुख्य न्यायाधीश सहित अनेक पूर्व न्यायाधीश, सेवानिवृत्त प्रशासनिक पुलिस एवं अन्य अधिकारी, विभिन्न देशों में रहे भारत के राजदूतों से लेकर बुद्धिजीवी, शिक्षाविद, नोबेल पुरस्कार, भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्म श्री और मैग्सेसे पुरस्कार के साथ साथ साहित्य अकैडमी पुरस्कार से सम्मानित महानुभाव भी सम्मिलित हुए। प्रख्यात अधिवक्ता, चिकित्सक, ष्ट, समाचार पत्रों और ञ्जङ्क चैनल्स के संचालक/सम्पादक, प्रख्यात सोशल-मीडिया इंफ्ल्युएंसर्स आदि के साथ साथ देश के बड़े औद्योगिक परिवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। भारत के प्रमुख राज परिवारों के सदस्यों से लेकर अनेक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ी; चित्रकारी, शिल्पकारी, गायन, लेखन-साहित्य, वादन, नृत्यकला आदि ललित कलाओं के कलाकार; हिंदी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, बंगाली, ओडिया, असमिया, भोजपुरी, पंजाबी एवं हरियाणवी फ़िल्म उद्योग की अनेक हस्तियाँ भी इस आयोजन में सम्मिलित हुईं। 53 देशों से आये 150 प्रतिनिधि भी इस समारोह में सम्मिलित हुए। मुख्य पूजा में 15 यजमान बैठे थे, जिनमे सभी जातियों-वर्गों (सिख, जैन, नवबौद्ध, निषाद समाज, वाल्मीकि समाज, जनजाति समाज, घुमंतू जातियाँ आदि) और भारत की सभी दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उत्तर-पूर्व) से आए व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व था। इन सभी की मंच पर ही बैठने की व्यवस्था थी। देश का पोषण एवं विकास करने वाले किसान और मज़दूर बंधुओं के साथ सहकारिता और ग्राहक संगठनों के प्रतिनिधि भी यहाँ उपस्थित थे। रूञ्ज व टाटा समूह के अधिकारी, अभियंता और श्रमिक भी यहाँ उपस्थित थे। जिन श्रमिकों ने प्रभु श्री राम के मंदिर के निर्माण को आकार दिया, प्रधान मंत्री जी ने स्वयं उन पर पुष्प-वर्षा करके उनका अभिनंदन किया। संघ और विश्व हिंदू परिषद के अनेक प्रबंधक कार्यकर्ताओं से लेकर संघ के पूजनीय सरसंघचालक माननीय श्री मोहन भागवत और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री रामलला प्रतिष्ठित हुए हैं तो सभी देवी-देवताओं ने भी उपस्थित होकर अपना आशीर्वाद अवश्य ही दिया होगा।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के आग्रह पर जहां विश्व हिंदू परिषद के सैकड़ों कार्यकर्ता दिन-रात लगे थे, वहीं ट्रस्ट के ही आग्रह पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व अन्य कई स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों के अनेक कार्यकर्ता इस आयोजन की व्यवस्था में थे। उनके प्रबंधन के अनुभव का लाभ सूक्ष्म दृष्टि से व्यवस्था के चिंतन में हुआ। जिसका अनुभव वहाँ आए प्रत्येक रामभक्त को हो रहा था। चाहे स्वागत हो, चाहे बैटरी चालित वाहन, चाहे व्हील चेयर की व्यवस्था हो, चाहे पदवेश उतारने की व्यवस्था। सभी के जूते स्वयमसेवी संस्था के प्रमुख लोग अपने हाथों से उतार कर रख रहे थे और लौटने पर पहना भी रहे थे। लघुशंकलयों के बाहर भी चप्पलों की व्यवस्था थी। सभी कुछ सूक्ष्म चिंतन करके तैयार किया गया था। अयोध्या के नागरिक और प्रशासन भी ट्रस्ट के साथ समन्वय करते हुए अयोध्या को संवारने में लग गए। अयोध्यावासी सामान्य-जन के लिए यह एक कौतूहल का विषय था कि कैसे 4 माह में अयोध्या नगरी का स्वरूप सहसा परिवर्तित हो गया। भक्त-जन, पूज्य साधु संत और अनेक महानुभावों की सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण विषय था, जो कि स्थानीय प्रशासन, पुलिस और अन्य सुरक्षा दलों के बिना सम्भव नहीं था। उत्तर प्रदेश और अयोध्या पुलिस के सहयोग पूर्ण, मित्रवत् व्यवहार से सभी प्रभावित हुए। उसी का परिणाम था कि इतना बड़ा कार्य सरलता से निर्विघ्न व यशश्विता के साथ सम्पन्न हुआ। सभी के साथ प्रभु श्री राम का आशीर्वाद तो था ही।

तीन दिनों में अयोध्या में बिना किसी राजनैतिक या व्यावसायिक आयोजन के 71 निजी विमान गतिमान हुए। लखनऊ तथा अयोध्या के विमानतल एवं लखनऊ, अयोध्या, काशी, गोरखपुर, गोंडा, सुल्तानपुर, प्रयागराज आदि रेल-स्टेशनों पर केसरिया पटके के साथ स्वागत एवं यातायात की पूर्ण व्यवस्था की गयी। विभिन्न उपस्थित लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, सभी के लिए आवास व्यवस्था सावधानीपूर्वक तैयार की गई थी। टेंट सिटी, होटेल, आश्रम, धर्मशाला सहित कुछ विद्यालयों तथा 200 स्थानीय परिवारों में रुकने की व्यवस्था की गयी थी। सम्पूर्ण अयोध्या 'राम आएँगे' गीत की ध्वनि से गुंजायमान थी। अयोध्या की गलियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद देर रात्रि तक सभी ने लिया।

भारत का इतिहास साक्षी है कि यह स्वयं में ऐसा एक ही कार्यक्रम था जहां इस स्तर के व्यक्ति 4-5 घंटों तक सामान्य कुर्सियों पर बैठे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री देवेगौड़ा जी वहाँ 4 घंटे व्हील-चेयर पर बैठे। ना तो वहाँ किसी के सहयोगी थे, ना ही सुरक्षाकर्मी। प्रसाद स्वरूप सभी को जल सेवा एवं जलपान अपनी कुर्सियों पर ही दिया गया। प्रभु श्री राम के घर में सभी जातियाँ, सभी वर्ग, सभी क्षेत्र, एक समान थे, एक साथ थे। सभी ने अपने औहदे, अपनी सामाजिक-आर्थिक महत्ता से ऊपर उठकर अयोध्या के सादगी-पूर्ण आतिथ्य को सहृदय स्वीकार किया।

भारत के हर नगर, हर गाँव में सभी प्रभु श्री राम के शुभागमन हेतु आतुर थे। सम्पूर्ण भारत का हर गाँव, हर मोहल्ला, हर मंदिर अयोध्या बन गया था। जो अयोध्या नहीं आ पाए, उन्होंने स्थानीय मंदिरों में पूजन किया, रात्रि में दीपोत्सव मनाया। सभी का मन एवं आत्मा उस दिन अयोध्या में ही थे। श्री रामलला के स्वागत हेतु अयोध्या नगरी एवं मंदिर परिसर को भी असंख्य क्विंटल पुष्पों से सुसज्जित किया गया, भारत के सभी प्रांतों के परम्परागत वाद्य-वादक, 30 से अधिक कलाकारों ने वातावरण को राम-गीतों से संगीतमय कर दिया और आरती के समय सहस्त्रों पीतल की घंटियों से मंदिर परिसर गुंजायमान हो उठा। रामलला के अवतरण के साथ ही, हेलिकॉप्टर द्वारा मंदिर परिसर पर की गयी पुष्प वर्षा से लग रहा था मानों सम्पूर्ण देवलोक प्रसन्ना होकर पुष्प-वर्षा कर रहा है। यह आयोजन एक समारोह मात्र के स्तर से ऊपर उठ गया था, यह एक दैवीय अनुभूति, एक आध्यात्मिक यात्रा में परिवर्तित हो चुका था। लोग भाव विभोर थे, वातावरण दिव्य लोक के समान एक अलौकिक आभा से आच्छादित हो गया। कुछ श्रद्धालुओं की आँखो में आँसू थे, कुछ नृत्य-लीन थे। कोई स्वर्ग की अनुभूति कर रहा था, कोई त्रेता युग की। सभी के लिए श्री राम पुनः लंका से अयोध्या लौट रहे थे। अगले दिन तो प्रातः 3 बजे से ही श्रद्धलुओं ने श्री रामलला के दर्शन हेतु पंक्ति-बद्ध होना प्रारम्भ कर दिया था। 23 जनवरी को लगभग 5 लाख लोगों ने उत्साह और पूर्ण अनुशासन के साथ श्री रामलला के दिव्य दर्शन किए।

अयोध्या के इस दैवी आयोजन ने जाति, वर्ग, भाषा, प्रांत, मत-पंथ की सीमाओं को पार करते हुए, परंपरा से ओत-प्रोत, फिर भी प्रगति को गले लगाते हुए, एक राष्ट्र की सामूहिक चेतना का जागरण किया। प्रभु श्री राम की चिर-विरासत का एक प्रमाण, जो विश्व भर में करोड़ों लोगों को प्रेरित और एकजुट करता है, यह आयोजन; एकता, अखंडता, समरसता और श्रद्धा के 'रामोत्सव' के रूप में युगों-युगों तक जीवित रहेगा। अब समय आ गया है कि हम प्रभु श्रीराम का स्मरण कर, भारत को सुखी, संपन्न, स्वस्थ, समर्थ और सम्मानित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का संकल्प लें। भारत को 'विश्व-गुरु' के रूप में स्थापित करें।

जय श्री राम!

(लेखक: अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)